॥ श्री हनुमान चालीसा ॥

दोहा

श्रीगुरु चरण सरोज रज निज मनु मुकुर सुधारि ।

बरनउ रघुवर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन कुमार ।

बल बुधि विद्या देहु मोहि हरहु कलेश विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥१॥

राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥२॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥३॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुँचित केसा ॥४॥

हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजे । काँधे मूँज जनेऊ साजे ॥५॥

शंकर सुवन केसरी नंदन । तेज प्रताप महा जगवंदन ॥६॥

विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥७॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मनबसिया ॥८॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा । विकट रूप धरि लंक जरावा ॥९॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचंद्र के काज सवाँरे ॥१०॥

लाय सजीवन लखन जियाए । श्री रघुबीर हरषि उर लाए ॥११॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरत-हि सम भाई ॥१२॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावै । अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥१३॥

सनकादिक ब्रम्हादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥१४॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥१५॥

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना । लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥१७॥

जुग सहस्र जोजन पर भानू । लिल्यो ताहि मधुर फ़ल जानू ॥१८॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही । जलधि लाँघि गए अचरज नाही ॥१९॥

दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०॥

राम दुआरे तुम रखवारे । होत ना आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥

सब सुख लहैं तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहु को डरना ॥२२॥

आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तै कापै ॥२३॥

भूत पिशाच निकट नहि आवै । महावीर जब नाम सुनावै ॥२४॥

नासै रोग हरे सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥२५॥

संकट तै हनुमान छुडावै । मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥२६॥

सब पर राम तपस्वी राजा । तिनके काज सकल तुम साजा ॥२७॥

और मनोरथ जो कोई लावै । सोहि अमित जीवन फल पावै ॥२८॥

चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥

साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥३०॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥३१॥

राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥३२॥

तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३॥

अंतकाल रघुवरपुर जाई । जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥३४॥

और देवता चित्त ना धरई । हनुमत सेहि सर्व सुख करई ॥३५॥

संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥३६॥

जै जै जै हनुमान गुसाईं । कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥३७॥

जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ॥३८॥

जो यह पढे हनुमान चालीसा । होय सिद्ध साखी गौरिसा ॥३९॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥४०॥

दोहा

पवन तनय संकट हरन मंगल मूरति रूप ॥

राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥